2 मार्च 2020, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 42, अंक : 23
मार्च (प्रथम), 2020 (वीर नि.संवत्-2546)

संस्थापक सम्पादक : अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल
सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

कुन्दकुन्द जयंती संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 30 जनवरी को कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य कुन्दकुन्ददेव की जयंती मनाई गई।

इस अवसर पर प्रात:काल श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के समस्त छात्रों एवं स्थानीय साधर्मियों ने मिलकर विशेष पूजा की। सायंकाल 7 बजे आचार्य कुन्दकुन्द पर बनी एनिमेशन फिल्म दिखाई गई। तदुपरान्त जयन्ती सभा का आयोजन हुआ, जिसकी अध्यक्षता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने की। विशिष्ट अतिथियों के रूप में श्रीमती कमला भारिल्ल, श्री कैलाशचंदजी सेठी, श्री ताराचंदजी सौगानी, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री, पण्डित गौरवजी शास्त्री, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री आदि महानुभाव उपस्थित थे।

सभा को संबोधित करते हुए डॉ. भारिल्ल ने कहा कि आचार्य कुन्दकुन्ददेव ने स्वयं को देखने का दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है, जहाँ अन्य दार्शनिक मारने या बचाने की प्रेरणा देते हैं, वहीं आचार्य कुन्दकुन्द ने बताया कि कोई भी जीव किसी अन्य जीव को न मार सकता है और न ही बचा सकता है। आत्मकल्याण ही उनके प्रतिपाद्य का एकमात्र बिन्दु है।

डॉ. भारिल्ल के अतिरिक्त डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं डॉ. सुषमाजी संघवी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। छात्रों के अन्तर्गत अभिषेक जैन देवराह, समकित जैन ईसागढ, अंकुर जैन खड़ैरी, मयंक जैन बण्डा ने काव्य पाठ के माध्यम से, शुभांशु जैन जबलपुर ने आचार्यदेव का आचार्यदेव का भाषा-सौष्ठव व तत्कालीन परिस्थिति विषय पर, पवित्र जैन आगरा ने चतुर्विध संघ विभाजन विषय पर, संयम जैन दिल्ली ने आचार्य कुन्दकुन्द की दार्शनिकता विषय पर अपने मनोभाव व्यक्त किए। शास्त्री तृतीयवर्ष के अर्पित जैन भिण्ड द्वारा बनाये गये आचार्यदेव के सुन्दर चित्र का विमोचन मंचासीन अतिथियों द्वारा किया गया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण दुर्लभ जैन गुढाचन्द्रजी ने, संचालन शास्त्री तृतीयवर्ष से स्वप्निल जैन सिवनी व मयंक जैन बण्डा ने एवं निर्देशन डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील ने किया।

शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल का अभिनन्दन

जयपुर (राज.) : प्रसिद्ध मोटिवेशनल वक्ता, लेखक व लोकप्रिय आध्यात्मिक प्रवचनकार, लाखों लोगों के जीवन को सही दिशा देने वाले **श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल** जयपुर को वैश्विक समृद्धि, फैशन, जीवन शैली और व्यापार पत्रिका ''पैशन विस्टा'' द्वारा देश के **''मोस्ट एडमायर्ड ग्लोबल इंडियन''** अवार्ड प्रदान किया गया, इस उपलक्ष्य में दिगम्बर जैन समाज बापूनगर द्वारा आपका अभिनन्दन किया गया।

इस अवसर पर सम्भाग के अध्यक्ष श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी, मानद मंत्री डॉ. राजेन्द्रकुमार जैन, संयुक्त मंत्री श्री निर्मलकुमारजी संघी तथा श्री सुरेन्द्रकुमारजी मोदी द्वारा तिलक, माला, शॉल व प्रशस्ति-पत्र प्रदानकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में श्रीमती कमला भारिल्ल एवं श्रीमती संध्या भारिल्ल भी उपस्थित थीं। **- डॉ. राजेन्द्रकुमार जैन**

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

4 से 9 मार्च	दिल्ली (विश्वास नगर)	सिद्धचक्र विधान
4 व 5 अप्रैल	दिल्ली (आत्मार्थी ट्रस्ट)	दीक्षान्त समारोह एवं उपकार दिवस
6 अप्रैल	दिल्ली	महावीर जयन्ती एवं उपकार दिवस
21 से 25 अप्रैल	देवलाली	गुरुदेव जयन्ती
26 अप्रैल	गजपंथा	गुरुदेव जयन्ती
17 मई से 3 जून	अहमदाबाद	प्रशिक्षण शिविर

सम्पादकीय –

पुद्गल द्रव्य एवं वैज्ञानिक आविष्कार

3

– डॉ. संजीवकुमार गोधा

पिछले अंक में हमने अनेक आगम प्रमाणों से इस बात को गइराई से जाना कि पुद्गल के परमाणु भी अनंत शक्ति संपन्न हैं। अब आगे...

(गतांक से आगे...)

(2) पुद्गलों की गमन शक्ति और वैज्ञानिक आविष्कार –

जैनदर्शनानुसार पुद्गल भी अनंत शक्ति सम्पन्न द्रव्य है। वह अणु और स्कंध – दो भेदों वाला है।[22] पुद्गल के सबसे छोटे अंश को अणु कहते हैं, इसे ही परम सूक्ष्म होने से परमाणु कहा जाता है[23] तथा अनेक परमाणुओं से मिलकर स्कंध बनता है। **प्रसिद्ध वैज्ञानिक डाल्टन** ने जब सर्वप्रथम परमाणु की परिकल्पना की थी, तब कहा था कि undivisable the ultimate partical is the Atom. Atom (अणु) की यह परिभाषा जैन आगमों में प्राचीन काल से मौजूद है। आचार्य कुन्दकुन्द ने इसे परिभाषित करते हुये लिखा – पुद्गल स्कंध का भेद करते हुये जिस अविभाजित अंश तक पहुँचा जाता है, वह अंतिम भाग परमाणु समझना चाहिये, वह परमाणु अविभागी, एक, शाश्वत कहा गया है।[24] इसीलिये आचार्य उमास्वामी ने अणु की उत्पत्ति का कारण भेद को बताते हुये '**भेदादणुः**'[25] सूत्र दिया।

वैज्ञानिकों ने उस समय जिस अणु की खोज की थी, वर्तमान नवीन शोध में उसके भी विभाजन हो चुके हैं; किन्तु आगमों में दी गई व्याख्यायें अपरिवर्तनीय है। श्लोकवार्तिक में कहा है कि परम अणु तो वही हो सकता है, जिससे फिर कोई छोटा अवयव न कभी हुआ, न है, न होगा, '**अणोरप्यणीयान् न परो वर्तते।**'[26]

ऐसे अत्यन्त सूक्ष्म पुद्गल के एक परमाणु की गमन शक्ति का वर्णन करते हुये जिनागम में लिखा है कि वह एक समय में 14 राजु (असंख्य योजन अथवा असंख्यासंख्य मील) गमन कर सकता है।[27] समय काल का सबसे छोटा/अविभागी अंश है।[28] एक सैकण्ड में संख्यात हजार कोड़ाकोड़ी आवलियाँ होती है और एक आवलि में जघन्य युक्तासंख्यात समय होते हैं।[29] गोम्मटसार में '**आवलि असंख समया**'[30] शब्द का प्रयोग किया गया है। सामान्य रूप से कहा जा सकता है कि एक सैकण्ड में असंख्यात समय होते हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि एक सैकण्ड के असंख्यातवें भाग मात्र काल में वह परमाणु लोक के एक कोने से दूसरे कोने तक गमन करने में सक्षम है,[31] यह उसकी स्वयं की सामर्थ्य है।

गोम्मटसार में संज्ञी जीवों के कर्ण द्वारा बारह योजन तक के शब्दों को सुन लेने की सामर्थ्य का उल्लेख किया है।[32] वस्तुत: शब्दों की धारायें तो सैंकड़ो योजन तक पहुँच जाती होंगी। वहाँ तो बिना किसी यन्त्र के चक्रवर्ती द्वारा सुनने की उत्कृष्ट सामर्थ्य बताई है। यन्त्रों के निमित्त से तो हजारों मील दूर से गमन करके आ रहे शब्दों को यहाँ सुन लिया जाता है।

हमें विज्ञान के माध्यम से दिखने वाले आविष्कार – फैक्स, एस.एम.एस., मोबाईल, फेसबुक, वॉट्सअप, ई-मेल आदि में अद्भुत चमत्कार दिखता है; किन्तु आधुनिक विज्ञान के इन सभी आविष्कारों में पुद्गलों की गमन शक्ति ही कार्य कर रही है। यहाँ बटन दबाया और हजारों मील दूर प्रत्यक्षवत् बात हो रही है। यहाँ से फाईल ई-मेल करते हैं और सैकेण्डों में परदेश पहुँच जाती है। आज हम हजारों मील दूर हो रहे कार्यक्रमों को दूरदर्शन की स्क्रीन पर प्रत्यक्षवत् देखते है। इन सभी का कारण पुद्गलों का एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में शीघ्र गमन ही दृष्टिगोचर होता है। बिजली के तारों में दौड़ते हुये करंट की तीव्र गति से आज कौन अपरिचित है ? उक्त आविष्कार तो अभी कुछ दशकों पूर्व हुये हैं; किन्तु जैन संतों द्वारा पौद्गलिक शक्तियों का उल्लेख तो हजारों वर्ष पूर्व ही कर दिया गया था।

क्या विज्ञान के इन आविष्कारों से आचार्यों द्वारा कही गई पुद्गल की गमन शक्ति संबंधी उक्त बात पर हमारी श्रद्धा मजबूत नहीं होती ? इनसे हमारा विश्वास और अधिक दृढ होता है। वर्तमान में हो रही इस प्रकार की वैज्ञानिक शोध खोज का मूल उद्गम स्रोत हजारों वर्षों पूर्व लिखे गये आगमों में पुद्गल की शीघ्र गमन शक्ति का उल्लेख ही है। उस शक्ति को पहिचान कर उसकी व्यक्तता के बिना ये सब आविष्कार संभव न होते। इसी प्रकार के अनेक आविष्कारों एवं शक्तियों की चर्चा आगामी अंक में... **(क्रमशः)**

22. तत्त्वार्थसूत्र, 5/25
23. षड्दर्शन समुच्चय, का. 49/182, पृष्ठ-255
24. पंचास्तिकाय संग्रह, गाथा-77
25. तत्त्वार्थसूत्र, 5/27
26. तत्त्वार्थ श्लोकवार्तिक, भाग-6, पृष्ठ-107
27. बृहद्द्रव्य संग्रह, गाथा-22 की टीका
28. तिलोयपण्णत्ति, अध्याय-4, गाथा-288
29. तत्त्वार्थ श्लोकवार्तिक, भाग-6, पृष्ठ-205
30. गोम्मटसार जीवकाण्ड, गाथा-574
31. प्रवचनसार, गाथा-139 की तत्त्वप्रदीपिका टीका
32. गोम्मटसार जीवकाण्ड, गाथा-169

सत्पथ वार्षिक महोत्सव संपन्न

(पण्डित टोडरमलजी के त्रिजन्मशताब्दी वर्ष के अवसर पर)

नागपुर (महा.) : बालकों और युवाओं को नैतिक मूल्यों का ज्ञान कराने के उद्देश्य से एम्प्रेस सिटी जैन मन्दिर में सत्पथ पाठशाला का आयोजन किया जा रहा है, जिसका वार्षिक महोत्सव दिनांक 20 से 23 फरवरी तक धूमधाम से मनाया गया।

इस अवसर पर इंटर पाठशाला ड्रॉइंग व मॉडल मेकिंग प्रतियोगिता, विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम, व्याख्यानमाला, विधान आदि कार्यक्रम आयोजित किये गये। मुख्य सांस्कृतिक कार्यक्रम कविवर्य सुरेश भट सभागृह में आयोजित हुये, जिसमें अहिंसक जीवनशैली को प्रेरित करने के लिए विविध कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये, जिसके मुख्य अतिथि श्री अजितप्रसादजी, श्री हेमन्त लोढा, श्री निखिल कुसुमधर, श्री हार्दिक आई. एस. जैन, श्री सोनू जैन, श्री वीनूभाई, श्री उल्लासभाई तथा अमेरिका से श्री प्रमोदभाई शाह, श्री विलासभाई शाह, श्री अखिल जैन आदि उपस्थित थे।

महोत्सव में ब्र. अभिनन्दनजी देवलाली, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित संजयजी जेवर, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, डॉ. विवेकजी शास्त्री, पण्डित प्रसन्नजी शेटे, पण्डित श्रुतेशजी शास्त्री, पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री, पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री, पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित सुदर्शनजी शास्त्री, पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री, पण्डित विनीतजी शास्त्री, पण्डित रवीन्द्रजी महाजन, पण्डित नितिनजी शास्त्री, डॉ. स्वर्णलताजी, ब्र. रजनीदीदी आदि महानुभाव उपस्थित थे।

मॉडल मेकिंग व ड्रॉइंग प्रतियोगिता का संचालन डॉ. विमला जैन, प्राची जैन, मंजू जैन ने किया एवं पुरस्कार श्री शकुननरेश जैन सिंघई द्वारा दिये गये। नियमित सत्पथ परीक्षाओं में अन्वय जैन, कु.गाथा, दर्शिल, कु.स्वनि, कु.नित्या, सोनाक्षी, संवेग नायक, सुविधि सातपुते, उर्वी जैन आदि ने स्थान प्राप्त किया। इसका संचालन श्रुतेशजी सातपुते व रवीन्द्रजी महाजन ने किया। आदर्श विद्यार्थी पुरस्कार सिद्धान्त भागवतकर और उपादर्श अन्वय तुषार मोदी को दिया गया। पुरस्कार श्री प्रमोदभाई शाह अमेरिका द्वारा दिये गये।

पण्डितप्रवर टोडरमलजी के त्रिजन्मशताब्दी वर्ष के अवसर पर विश्वस्तरीय सत्पथ प्रश्नमंच का विमोचन सहस्राधिक जन समुदाय के बीच दिव्यदेशना ट्रस्ट दिल्ली, कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई, जैन अध्यात्म अकेडमी ऑफ नॉर्थ अमेरिका, मुमुक्षु आश्रम कोटा के प्रतिनिधियों के करकमलों से संपन्न हुआ।

कार्यक्रम का संयोजन डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर द्वारा किया गया। **– सत्पथ फाउण्डेशन**

IMPC-2020 अनेक उपलब्धियों के साथ संपन्न

मुम्बई : यहाँ विले पार्ले स्थित श्री सीमंधरस्वामी दिगम्बर जिनमंदिर में JAINEXT - The Next Generation Jains संगठन द्वारा आयोजित Inter Mumbai Pathshala Competition - 2020 (IMPC) श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल ट्रस्ट पार्ला–सांताक्रुज के सौजन्य से दिनांक 16 फरवरी को संपन्न हुआ।

इस प्रतियोगिता में मुम्बई के विभिन्न उपनगरों की 23 पाठशालाओं के 300 विद्यार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम को पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के यूट्यूब चैनल के माध्यम से सहस्राधिक लोगों ने ऑनलाईन देखा।

इस अवसर पर प्रात: 7 से रात्रि 8 बजे तक अनेक ज्ञानवर्धक प्रतियोगिताओं का संचालन किया गया, जिसमें जिनेन्द्र–पूजन, गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन के पश्चात् प्रतियोगिताओं का उद्घाटन हुआ। प्रतियोगिताओं के अन्तर्गत भजन, भाषण, वाद–विवाद, कथा–कथन, प्रश्नोत्तरी, अन्ताक्षरी, लघु–नाटिका, निबंध, चित्रकला, प्रोजेक्ट तथा Memes making जैसी 11 प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। प्रतियोगिताओं में सभी बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। मुम्बई की पाठशालाओं में प्रथम स्थान सीमंधर जिनालय झवेरी बाजार एवं द्वितीय स्थान सर्वोदय संस्कार शाला घाटकोपर ने प्राप्त किया।

सभी कार्यक्रम JAINEXT संगठन के कार्यकर्ताओं के सहयोग से संपन्न कराये गये। अन्त में सभी अध्यापकों, कार्यकर्ताओं व मुमुक्षु समाज का आभार व्यक्त किया गया।

पुरस्कार वितरण समारोह संपन्न

घाटकोपर–मुम्बई : यहाँ **IMPC-2020** में उपविजेता रही सर्वोदय संस्कार पाठशाला द्वारा आयोजित सर्वोदय संस्कार पुरस्कार समारोह दिनांक 23 फरवरी को संपन्न हुआ।

दिनांक 16 फरवरी को आयोजित इंटर मुम्बई पाठशाला प्रतियोगिता **IMPC-2020** में भाग लेने वाले बच्चों को इस अवसर पर सम्मानित किया गया। बच्चों के उत्साहवर्धन हेतु सभी पुरस्कार श्रीमती रेणु–अनिलजी जैन एवं श्रीमती मीरादेवी–सूरजमलजी जैन द्वारा प्रदान किये गये। सर्वप्रथम पण्डित विनीतजी शास्त्री ने पाठशाला की रूपरेखा प्रस्तुत की तथा पाठशाला को हम कैसे व्यवस्थित चला सकते हैं, इसकी पूरी जानकारी दी। तत्पश्चात् पण्डित किशोरजी शास्त्री, पण्डित भावेशजी शास्त्री व अन्य गणमान्य महानुभावों ने बच्चों को प्रेरित करने हेतु अपने मनोभाव व्यक्त किये।

कार्यक्रम का मंगलाचरण दिव्य राहुलजी जैन ने, संचालन अनिलजी शास्त्री ने एवं आभार प्रदर्शन विनीतजी शास्त्री ने किया।

स्वयं अंतर में रुचि रखकर वांचन का समय निकाल लेना। कार्य ऐसे न होने चाहिए कि स्वयं के वांचन–विचार में अड़चन करें। इतने सारे काम न हो कि वांचन–विचार का अवकाश ही न मिले। यदि ऐसा है तो स्वयं के कार्य कम करके निवृत्ति मिले ऐसा करना चाहिए।

– (आत्मधर्म, अगस्त–2019 पृष्ठ 5 से साभार)

राष्ट्रीय जैनदर्शन विद्वत् संगोष्ठी संपन्न

हस्तिनापुर (उ.प्र.) : यहाँ निर्माणाधीन तीर्थधाम चिदायतन की पावन धरा पर जैन विद्या शोध संस्थान-संस्कृति विभाग उत्तरप्रदेश एवं दिव्य देशना ट्रस्ट दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन उस्मानपुर व मेरठ द्वारा आयोजित राष्ट्रीय जैनदर्शन विद्वत् संगोष्ठी दिनांक 13 से 16 फरवरी तक सानन्द संपन्न हुई।

गोष्ठी का संयोजन डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर एवं पण्डित ऋषभजी शास्त्री उस्मानपुर ने किया।

इस अवसर पर आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी.प्रवचनों के अतिरिक्त ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर, पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन, पण्डित सुनीलजी जैनापुरे, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, डॉ. योगेशजी अलीगंज, पण्डित विकासजी छाबड़ा इन्दौर, ब्र. सुजाताताई रोटे, पण्डित सचिनजी अकलूज मंगलायतन, ब्र. अमित भैया विदिशा, पण्डित जे.पी. दोशी मुम्बई आदि अनेक वरिष्ठ विद्वानों का विशेष सान्निध्य, समागम एवं वक्तव्य का लाभ मिला। साथ ही पण्डित शुभमजी, पण्डित समर्थजी, पण्डित चर्चितजी, पण्डित अनुभवजी, पण्डित अच्युतकांतजी, पण्डित मंथनजी आदि अनेक युवा विद्वत् प्रतिभाओं का भी परिचय हुआ।

छ: सत्रों में आयोजित इस संगोष्ठी में तत्त्वविचार और आत्मानुभूति, उपयोग, श्रावकाचार, श्रमणाचार, पांच समवाय, कर्म मीमांसा आदि विषयों पर लगभग 50 विद्वानों द्वारा सहस्राधिक साधर्मियों की उपस्थिति में अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया गया।

गोष्ठी को सफल बनाने में पण्डित संयमजी शास्त्री नागपुर, पण्डित जिनेशजी शेठ मुम्बई, विदुषी प्रज्ञाजी देवलाली, पण्डित ऋषभजी शास्त्री शंकरनगर, पण्डित अमनजी शास्त्री कृष्णानगर आदि विद्वानों का सक्रिय सहयोग रहा। इस अवसर पर श्री अजितप्रसादजी-वैभव जैन दिल्ली, श्री अजितजी बड़ौदा, श्री स्वप्निलजी मंगलायतन, श्री नरेशजी नागपुर, श्री सुरेशजी ऋतुराज, प्रो. अभयकुमारजी लखनऊ, श्री विलासभाई शिकागो आदि देश-विदेश से अनेक विशिष्ट अतिथियों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

इन्द्रध्वज महामंडल विधान संपन्न

गौरझामर (म.प्र.) : यहाँ श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जिनमंदिर में दिनांक 17 से 22 फरवरी तक इन्द्रध्वज महामंडल विधान संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला। विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित अश्विनजी नानावटी बांसवाड़ा द्वारा पण्डित अशोकजी उज्जैन, पण्डित सुमितजी दीवानगंज एवं पण्डित पीयूषजी कोटा के सहयोग से संपन्न हुये।

कार्यक्रम में लगभग 200 साधर्मियों ने लाभ लिया।

शोक समाचार

(1) सोनगढ (गुज.) निवासी ब्र. पुष्पाबेन छोटालाल शाह का 88 वर्ष की आयु में शांत-परिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

आप 12-13 वर्ष की आयु से ही सोनगढ में रह रही थीं। आपने जीवनभर गुरुदेवश्री का प्रत्यक्ष लाभ लिया और उनके द्वारा प्रचारित तत्त्वज्ञान को अपने जीवन में उतारा।

टोडरमल स्मारक एवं विद्यार्थियों के प्रति आपके हृदय में भरपूर वात्सल्यभाव रहता था। आप जब भी जयपुर पधारती थीं, यहाँ छात्रों को देखकर आपको बहुत प्रसन्नता होती थी। जयपुर से कोई विद्वान/छात्र सोनगढ आया है, यह पता चलते ही आप उसे मिलने जरूर बुलाती और सभी की कुशलक्षेम पूछती थीं। ज्ञातव्य है कि आप ब्र. सुशीलाबेन, रजनीभाई दादर एवं हंसमुखभाई शाह पार्ला की बहिन थीं।

(2) सूरत (गुज.) निवासी श्री धन्यकुमारजी गोधा का 87 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

प्राध्यापक पद से सेवानिवृत्त होने के बाद आपने अपना पूरा जीवन तत्त्वज्ञान के लिए समर्पित कर दिया। 81 वर्ष की आयु में आपने टोडरमलजी कृत अर्थसंदृष्टि पर पीएच.डी. और 86 वर्ष की आयु में डी.एससी. की उपाधि प्राप्त की।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित प्रत्येक गतिविधि में आप अनन्य सहयोगी थे। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान व जैनपथप्रदर्शक हेतु 2100/- रुपये एवं वार्षिकोत्सव में 1 समय के नाश्ते हेतु 21 हजार रुपये की राशि प्राप्त हुई।

(3) भीलवाड़ा (राज.) निवासी डॉ. प्रवीणकुमार जैन पुत्र स्व. श्री मनोहरलालजी जैन का 80 वर्ष की आयु में दिनांक 2 फरवरी को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 5000/- रुपये प्राप्त हुए।

दिवंगत आत्माएं चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

नवीन भवन का लोकार्पण समारोह संपन्न

कोटा (राज.) : यहाँ सन्मति संस्कार संस्थान के नवीन भवन का भव्य लोकार्पण समारोह दिनांक 31 जनवरी व 1 फरवरी को संपन्न हुआ।

इस अवसर पर डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर, पण्डित नीलेशजी मुम्बई, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित अनिलजी शास्त्री धवल भोपाल, पण्डित अशोकजी राघौगढ, पण्डित सुरेशजी गुना, पण्डित आलोकजी कारंजा आदि विद्वानों का समागम प्राप्त हुआ।

इसी प्रसंग पर मोक्षमार्ग प्रकाशक के विभिन्न अध्यायों पर गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर ने की। कार्यक्रम में उपस्थित सभी विद्वानों ने मोक्षमार्गप्रकाशक की विषय-वस्तु का विश्लेषण करते हुए अपने मनोभाव व्यक्त किये।

कार्यक्रम में स्थानीय लोगों के अतिरिक्त मुम्बई, सूरत, गुना, बारां, दिल्ली आदि नगरों से लगभग 700 साधर्मियों ने लाभ लिया।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित सुनीजी धवल एवं ब्र. नन्हे भैया सागर द्वारा संपन्न हुये। **- जयकुमार जैन, कोटा**

समयसार विद्यानिकेतन के बढते चरण...

ज्ञानगोष्ठियाँ संपन्न

आत्मायतन–ग्वालियर (म.प्र.) : यहाँ श्री समयसार विद्यानिकेतन में रविवारीय ज्ञानगोष्ठी के अन्तर्गत '**तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता**' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अध्यक्ष पण्डित धनेन्द्रजी शास्त्री, मुख्य अतिथि डॉ. नितिनजी जैन एवं विशिष्ट अतिथि डॉ. रीना जैन थे। सभी विद्यार्थियों ने जैनदर्शन के विभिन्न विषयों पर अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का मंगलाचरण आदि जैन पाली ने, संचालन पण्डित प्रवीणजी शास्त्री ने एवं आभार प्रदर्शन पण्डित प्रदीपजी शास्त्री ने किया।

अठारहवीं रविवारीय ज्ञानगोष्ठी के अन्तर्गत कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई से प्रकाशित '**अध्यात्म संजीवनी**' पर आधारित भजन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री राकेशजी नायक (अध्यक्ष–राज्य शिक्षक कांग्रेस, म.प्र.), मुख्य अतिथि श्री राजीवजी पाठक (कार्याध्यक्ष–रा.शि.कां. म.प्र.) एवं विशिष्ट अतिथि श्री हिम्मतसिंहजी यादव थे। मुख्य वक्ता के रूप में श्री कुलदीपसिंह राजपूत (जिलाध्यक्ष–रा.शि.कां., ग्वालियर) उपस्थित थे। निर्णायक के रूप में श्री पंकजजी पाठक (ए.डी.पी.सी., ग्वालियर) एवं श्री दीपकजी शर्मा (संगठन मंत्री–रा.शि.कां., म.प्र.) उपस्थित थे। अन्य अतिथियों में श्री जे.पी.व्यास (जिला महामंत्री–रा.शि.कां.ग्वालियर), श्री अमरबन्धु त्रिपाठी, श्री संतकुमारजी, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री (निर्देशक–समयसार विद्यानिकेतन) एवं श्रीमती अंजलि जैन (प्राचार्या–समयसार विद्यानिकेतन) उपस्थित रहे।

आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी

वे महापुरुष मानव तिलक जिनवाणी भक्त उपासक थे।
विद्वानों के विद्वान हुए टोडरमल से वो नायक थे।।
जिनका परिचय इतिहास कहे जो खुद में खुद के नायक थे।
जयपुर नगरी में जन्म लिया द्वादश ग्रंथों के दायक थे।।
पाखण्डों को जो गिरा चले वो नेक हृदय जिज्ञासु थे।
कैसे टिकता पाखण्ड वहाँ वे पाखण्डों के नाशक थे।।
जिनका गौरव इतिहास कहे आचार्यकल्प पद धारक थे।
जो लीक से हटकर चले वरन् न भटके तत्त्वप्रचारक थे।।
कुछ पाखण्डी भयभीत हुए ये धर्म सुधारक पालक थे।
षडयन्त्र रखा भूपति समक्ष तब मृत्युदण्ड स्वीकारक थे।।
राजाज्ञा के पालक गज के नयनों में भी तब आंसू थे।
तब विवश हुआ अंकुश पाकर जयपुरवासी भी व्याकुल थे।।
मां के आंचल का वो सपूत छिन गया वे धर्म सुधारक थे।
कर्तव्यविमुख सब प्रजा खड़ी जन–जन के हृदय समाहित थे।।
जिनकी गाथा गाये प्राणी वो अमर पुरुष कहलाये थे।
जो धर्म तुला पर झूले थे हित की लोरी जो गाते थे।।

– अभिषेक जैन, देवराहा

जैनपथप्रदर्शक के स्वामित्व का विवरण

फार्म नं. 4 नियम नं. 8

समाचार पत्र का नाम : जैन पथप्रदर्शक (हिन्दी)
प्रकाशन स्थान : श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए–4, बापूनगर, जयपुर–15 (राज.)
प्रकाशन अवधि : पाक्षिक
मुद्रक : श्री प्रमोदकुमार जैन (भारतीय) जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम.आई.रोड, जयपुर (राज.)
प्रकाशक का नाम : ब्र. यशपाल जैन (भारतीय) पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए–4, बापूनगर, जयपुर –15 (राज.)
सम्पादक का नाम : डॉ. संजीवकुमार गोधा (भारतीय) श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए–4, बापूनगर, जयपुर –15 (राज.)
स्वामित्व : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए–4, बापूनगर, जयपुर –15 (राज.)

मैं ब्र. यशपाल जैन एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकृत जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

दिनांक : 2–3–2020

प्रकाशक :
ब्र. यशपाल जैन
ट्रस्टी, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

हार्दिक बधाई !

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के स्नातक **सचिनजी शास्त्री भगवां, सचिनजी शास्त्री भिण्ड, हर्षितजी शास्त्री खनियांधाना, निलयजी शास्त्री बरायठा, पंकजजी शास्त्री बमनी, आशीषजी शास्त्री भिण्ड, नियमजी शास्त्री सिलवानी, अभयजी शास्त्री सुनवाहा, निशंकजी शास्त्री टीकमगढ, अभिषेकजी शास्त्री कोलारस** एवं बांसवाड़ा विद्यालय के स्नातक **अंकितजी शास्त्री खड़ैरी** का मध्यप्रदेश शिक्षक भर्ती वर्ग–1 में संस्कृत विषय में चयन हुआ है।

इस उपलक्ष्य में महाविद्यालय परिवार एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई!

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

''अभी तो मैं जवान हूँ, अभी तो सारा जीवन पड़ा है, अभी तो बहुत जीना है, यह कपोल कल्पना है जो हमें इस तरह से छलती है कि कहीं का नहीं छोड़ती।''

मरणान्तक व्यक्ति को सम्बोधन (2)

लगता है अब विदाई की बेला आ ही गई है

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल (कार्यकारी महामंत्री–टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

इसी आलेख से –

– ''.....अब यदि यह धर्माराधना के अनुकूल ही नहीं रहा, जब इसका अंत आ ही गया है तो यही सही।

न तो यह हर्ष का विषय है और न ही विलाप का।

मैं न तो इसकी कामना ही करता हूँ और न ही इसके प्रति अरुचिवंत ही हूँ।''

– ''.....मैं आज किसके साथ मित्रता का भाव लेकर जाऊँ और किसके प्रति शत्रुता का? कल तो मैं उन्हें पहिचान ही नहीं पाऊँगा।''

– ''.....जब मेरे वश में कुछ है ही नहीं तब मैं ही क्यों विकल्पों में उलझा रहूँ। इस देह को इसके अनुरूप परिणमित होने दो, क्यों नहीं मैं अपना कार्य करूँ''

–''.....जीवनभर किया गया तत्त्वाभ्यास आज मेरी वह संचित निधि है जो मुझे इस संसार सागर से पार उस मुक्त अवस्था में पहुंचायेगी, जहाँ से फिर कभी आवागमन नहीं होगा।''

इस मामले में मैं पर्याप्त भाग्यशाली रहा कि मुझे इतना लम्बा यह जीवन मिला, जिससे मैं अधिकतम संभव समय तक जीवन जीकर आत्माराधना कर सका; अन्यथा जीवन में इतना समय मिलता ही कितनों को है।

एक तो ***यह मानव जीवन ही दुर्लभ है, फिर उत्तम धर्म, उत्तम कुल, जिनवाणी का श्रवण, स्वस्थ शरीर, उत्तम आजीविका, अनुकूल संबंधी और धर्माराधना के अनुकूल देश–काल।***

मेरा सौभाग्य कि मुझे यह सब कुछ उपलब्ध रहा।

यदि यह जीवन कुछ और दिन धर्माराधना के अनुकूल स्वस्थ बने रहकर चलता तो कुछ और समय धर्माराधना में व्यतीत होता पर अब ***यदि यह धर्माराधना के अनुकूल ही नहीं रहा, जब इसका अंत आ ही गया है तो यही सही।***

न तो यह हर्ष का विषय है और न ही विलाप का।

मैं न तो इसकी कामना ही करता हूँ और न ही इसके प्रति अरुचिवंत ही हूँ।

क्या नित प्रति जब हम अपने कपड़े बदलते हैं तो विलाप करते हैं? नहीं न!

जब तक यह आत्मा (मैं) अशरीरी नहीं हो जाता, तब तक इसका इस प्रकार शरीर बदलना भी तो एक सामान्य सी प्रक्रिया है, आखिर इसके प्रति इतनी संवेदनशीलता क्यों?

कपड़े बदलने के प्रति संवेदनशील तो वे दरिद्री हो सकते हैं, जिन्हें वर्तमान वस्त्र त्याग देने पर उससे बेहतर वस्त्र मिलने की उम्मीद न हो। ***मैंने तो इसप्रकार का धर्मसम्मत, संयमित जीवन जिया है कि मुझे अपने बेहतर भविष्य के बारे में संदेह का कोई कारण ही नहीं है।*** यूं भी सब कुछ तो देख–जान लिया है मैंने इस जीवन में, सब कुछ तो भोग लिया है, कुछ भी तो करना शेष नहीं रहा है।

इस संसार के स्वरूप का कोई भी पहलू तो मुझसे अपरिचित नहीं रहा, अब इससे कैसी ममता?

एक समय था (बचपन) जब लगता था कि मैं इनके (माता–पिता व संबंधी) बिना कैसे रहूंगा, फिर एक समय ऐसा आया जब लगने लगा कि ये मेरे बिना कैसे रहेंगे और फिर हम साथ–साथ कैसे और कब तक रह सकते हैं भला। अब कहीं ऐसा न हो कि कोई विचारने लगे कि यह सब कब तक चलेगा?

कितनी निकटता से मैंने देखा और कितनी गहराई से अनुभव किया है कि ***जगत के ये संयोग, ये भोग कितने दोगले हैं, दूर के ढोलों की ही तरह दूर से देखने पर कितने सुहाने लगते हैं; पर इनका यथार्थ तो बिलकुल इसके विपरीत है, इन्हें जितना भोगो, भूख बढती ही जाती है, तृप्ति तो कभी मिलती ही नहीं।***

स्पष्ट है कि तृप्ति का उपाय भोग नहीं। इनके सहारे तो मुझे इस जीवन में कभी भी संतुष्टी और तृप्ति मिलेगी ही नहीं न? तब क्यों मैं इनकी माया में ही उलझा रहूँ? क्यों न किसी विश्वस्त आश्रय की तलाश करूँ, जहाँ मुझे सच्चा सुख और तृप्ति मिले, मात्र तात्कालिक ही नहीं वरन् त्रैकालिक, हमेशा के लिए।

आज मुझे अपनी इस नादानी पर हंसी आ रही है कि अब तक भी क्यों मैं इन्हीं की माया में उलझा रहा?

इनका चरित्र तो सदा से ही स्पष्ट था, मैं स्वयं बहुत पहले ही इस निष्कर्ष पर पहुंच गया था, पर फिर भी मैंने इस ओर ध्यान ही नहीं दिया। बस इन्हीं की ममता में अटका रहा, इन्हीं के हाथों में खेलता रहा, ***इन भोगों और संयोगों ने मेरी शक्तियों और समय का भरपूर शोषण किया।***

अरे! इन्होंने क्या किया?

ये कौन होते हैं ऐसा करने वाले?

मैंने ही तो यह सब होने दिया।

संयोगों ने कब मुझे भुलावे में रखा? वे तो निरंतर ही बदलते रहे, स्पष्ट संकेत देते रहे, पुकार–पुकारकर कहते रहे कि हम अस्थिर हैं, हम तो बेवफा हैं। मैंने ही उनके संकेतों को नहीं समझा।

अब देखो न! एक–एककर सभी तो छोड़कर चले गये।

माता–पिता, बंधु–बांधव, सगे–संबंधी, मित्र–अनुचर (servants) कोई भी तो नहीं ठहरा साथ निभाने के लिये?

अरे! ***माता–पिता के समान निस्पृह, निस्वार्थ, ममतामयी संबंध तो और कौन होता है,*** पर वे तो मुझे अबोध (innocent) छोड़कर ही चले गये थे। जब वे ही ना रहे तो और किसकी आशा की जाए?

मुझे तो तभी समझ लेना चाहिए था, पर मैं नहीं समझा।

माना कि माता–पिता ने तो मरकर ही छोड़ा था। वे तो कहाँ छोड़ना चाहते थे, पर आखिर मौत पर किसका जोर चलता है। तब भी वे तो अंत तक मेरी ही चिंता करते रहे, सबसे मेरे बारे में ही बातें करते रहे, स्वयं मुझे और

अन्य सभी को मेरे ही बारे में निर्देश देते रहे, पर उनके जाने के बाद पिता समान बड़े भाई तो जीतेजी ही छोड़कर चले गए ना! जानबूझकर अनजान बनते हुए।

आखिर कौन था उनके सिवाय मेरा इस विशाल दुनिया में? पर उन्हें इस बात की परवाह ही कहाँ थी, ***उनके कुछ और भी तो अपने हो गये थे न! अब ये पत्नी और बच्चे हैं जो भले ही मुझ पर जान छिड़कते हैं, पर अब मैं ही कहाँ उनका हुआ? मैं भी तो आखिर चल ही दिया ना।***

अरे! औरों की बात क्या करें, यह देह तो मेरी अपनी है, कितना जतन किया मैंने इसका? दिन–रात इसी की सेवा में तो लगा रहा।

इसको सजाने–संवारने में, ***इसको खिलाने–पिलाने में, न तो भक्ष्य–अभक्ष्य का विचार किया और न ही दिन–रात का।***

इसको स्वस्थ रखने के लोभ में कितनी कसरतें कीं।

सरे बाजार घोड़े जैसा दौड़ा और कुत्ते जैसा हांफा।

भोजन किया तो इसके पोषण के लिए, छोड़ा तो इसके स्वास्थ्य के लिए, मैं इसके प्रति कितना समर्पित बना रहा, पर इसने कब मेरी एक भी सुनी?

जिस जवानी पर मैं इतना इठलाता था, वही मुझे छोड़कर चली गई

जिस शक्ति पर मुझे इतना गुमान था अब वही नहीं रही?

मेरे वे सुन्दर रेशमी बाल, जिसकी एक–एक लट को मैं घंटों–घंटों सजाता संवारता था, कहाँ गए वे?

पहले वे एक–एक कर काले से सफेद होते गए, मैं उन पर कालिख पोत–पोतकर ही जैसे–तैसे काम चलाता रहा, पर मैं अंततः असहाय सा ताकता ही रहा और आखिर वे भी मैदान छोड़ ही भागे।

यही हाल इस जमीन–जायदाद और धन–सम्पत्ति का रहा, इसने तो मानो सराय ही समझ लिया था मेरे घर को, जब चाहे आ जाती और चाहे जब चली जाती, मानो इसे इजाजत लेने की तो आवश्यकता ही न थी।

मैं ही इसका चाकर बना रहा, जब आई तो जश्न मनाता रहा, गई तो क्रंदन करता रहा, इस जैसी बेवफा के लिए। अब इसे बुद्धि का दिवालियापन नहीं तो और क्या कहा जाए?

इसप्रकार सारे ही संयोग तो एक–एककर मुझे छोड़कर चले गए। वे तो चले गए पर मैं तब भी उन्हीं की ममता में अटका रहा, विलाप करता रहा, दुःखी होता रहा।

तब तो वे जाते थे और मैं रह जाता था विरही बनकर, पर अब आज मैं ही चला उन्हें विरह की वेदना में छोड़कर।

पता नहीं क्यों बहुत बुरा–भला कहते हैं लोग इस मौत को, इसके विचार मात्र से कांपते हैं, इसके जिक्र से ही परहेज करते हैं।

लोग क्यों नहीं समझ पाते हैं कि मौत तो हमारी मित्र है जो इस सड़े–गले, जर्जर, भग्न शरीर से छुटकारा दिलाकर हमें नया स्वस्थ शरीर प्रदान करती है।

जिन जैसे संयोगों को छोड़कर मैं यहाँ से जा रहा हूँ, इन्हें तो मैं भूल जाऊँगा, इस बार मुझे तो उनसे विरह की पीड़ा नहीं होगी, मैं तो अपनी आदत के अनुरूप अपने नये संयोगों में तन्मय हो जाऊँगा।

अनादिकाल से आज तक मैं कितनी बार कितने जीवों के निकट संपर्क में आया और फिर उनसे बिछुड़ गया, अब मैं उन्हें जानता तक नहीं, उनकी याद में विरह की पीड़ा हो इस बात का तो प्रश्न कहाँ है?

संसार के इन अनन्त जीवों में से कितने जीव, मेरे कितने भवों में मेरे निकट संबंधी और हितैषी रहे होंगे और कितने प्रतिद्वन्दी व वैरी; पर मैं आज किसे पहिचानता हूँ?

ऐसे में ***मैं आज किसके साथ मित्रता का भाव लेकर जाऊँ और किसके प्रति शत्रुता का? कल तो मैं उन्हें पहिचान ही नहीं पाऊँगा।***

संभव है कि आज जो शत्रु हैं, अत्यंत पराये हैं, कल वे ही मेरे निकटतम और संबंधी बन जाएं और आज जो अपने हैं वे पराये हो जाएं। हो न हो, जो आज मेरे अपने हैं, अत्यंत निकट हैं, वे ही कल तक प्रतिद्वन्दी व पराये रहे हों।

अब कोई तो कहे कि किसे अपना मानकर प्रीति करूँ और किसे पराया जानकर बेरुखी दिखलाऊँ? सभी तो एक जैसे ही परद्रव्य हैं जो न कभी ''मैं'' हुए हैं और न ही ''मेरे''।

जिन्हें मैं छोड़कर जा रहा हूँ वे भी अपने नये संयोगों में व्यस्त हो जायेंगे। आखिर इस दुनिया में किसके लिए क्या रुक जाता है, ऐसी ही स्थितियों में मैं स्वयं ही कब किसी के लिए ठहरा?

आखिर क्या नहीं होगा?

क्या भूख या प्यास नहीं लगेगी, क्या मल–मूत्र क्षेपण नहीं होगा या श्वासोच्छवास ही रुक जायेगा?

क्या दिन–रात नहीं होंगे, निद्रा और जागरण नहीं होगा, क्या आवागमन ठहर जायेगा?

जब यह सबकुछ चलेगा तो यह धन्धा–व्यापार ही कब तक बंद रह सकेगा?

यह सब तो चलता ही रहेगा, मेरे चले जाने से क्या रुक जायेगा?

कुछ दिनों में तो लोग भूल ही जायेंगे कि इस नाम का भी कोई व्यक्ति था।

यूं भी मुझे इस बात से क्या फर्क पड़ता है कि कोई याद करे या भूल ही जाये। जब मैं ही वह नहीं रहा।

रही बात संयोगों की तो ऐसे ही संयोग मुझे वहाँ भी मिल ही जायेंगे जहाँ मैं जा रहा हूँ, मैं उनमें गाफिल हो जाऊँगा। मैं भी कब इन्हें याद करने वाला हूँ?

यही उचित भी तो है! ***आखिर हम जैसे लोगों के जीवन में ऐसा है ही क्या जिसे याद रखा जाए, आखिर हम किस मायने में अन्यों से भिन्न और विशिष्ट हैं जो उल्लेखनीय हो?***

आज जब यह शरीर आत्माराधना के अनुकूल ना रहा, मैं सबके लिए अनुपयोगी हो गया और सब मेरे लिए असहाय, वेदना रहित निराकुलता न रही, यह जीवन संभव ही न रहा, सबसे अच्छी बात तो यह है कि मेरी यह अवस्था देख–समझकर सभी लोग मेरे बिना जीवन जीने के लिए मानसिक रूप से तैयार हो ही गए हैं, ***जब मेरे वश में कुछ है ही नहीं तब मैं ही क्यों विकल्पों में उलझा रहूँ। इस देह को इसके अनुरूप परिणमित होने दो, क्यों नहीं मैं अपना कार्य करूँ।***

यूं तो आज इस अवस्था में मेरे लिए यह भी संभव नहीं होता कि जिनवाणी का अध्ययन व श्रवण कर सकूं, उसके मर्म को, अपने इस आत्मा के वैभव को समझ सकूं, स्वपर भेदविज्ञान कर सकूं, पर ***जीवनभर किया गया तत्त्वाभ्यास आज मेरी वह संचित निधि है जो मुझे इस संसार सागर से पार उस मुक्त अवस्था में पहुंचाएगी जहाँ से फिर कभी आवागमन नहीं होगा,*** मैं फिर कभी माँ की कोख में नहीं जाऊँगा, फिर कभी आज जैसी इस अवस्था में नहीं आऊँगा।

अब मैं स्वयं में स्थित होता हूँ।

अस्तु!

विशेष सूचना

जैनपथप्रदर्शक का विशेषांक 'अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल' शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है। यदि आपके पास उनसे संबंधित कोई महत्वपूर्ण फोटो हो तो हमें अवश्य उपलब्ध करावें।

उनका सरल/सहज जीवन किससे छिपा है? यदि उनके समागम/सान्निध्य के दौरान घटित कोई संस्मरण आपको ध्यान हो तो आप हमें अवगत करावें।

यदि आप लिख नहीं सकते तो हमें फोन पर बतायें, हम उसे भाषा देकर आपके नाम से ही प्रकाशित करेंगे।

यदि आपके पास जैनपथप्रदर्शक के पुराने (सन् 2000 के पूर्व) अंक हों तो वे भी भेजें।

आपके द्वारा भेजी गई सामग्री उपयोग में लेने के बाद सुरक्षित वापस भिजवा दी जायेगी।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर

मोबाइल - 9660668506

Email - ptstjaipur@yahoo.com

कांतिभाई मोटानी नहीं रहे

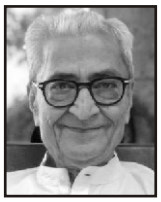

मुमुक्षु समाज के प्रमुख स्तम्भ, गुरुदेवश्री के अनन्य भक्त, मुमुक्षु मण्डल मुम्बई व देवलाली ट्रस्टी के ट्रस्टी **श्री कांतिलाल रामजीभाई मोटानी मुम्बई** का दिनांक 18 फरवरी को 87 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित होने वाली तत्त्वज्ञान की प्रत्येक गतिविधि में आपका तन-मन-धन से न केवल भरपूर सहयोग रहता था; अपितु आप यथाशक्ति उसका लाभ भी उठाया करते थे। आप देवलाली ट्रस्ट से प्रकाशित गुरुप्रसाद नामक आध्यात्मिक मासिक पत्रिका के आप तंत्री थे।

आपने डॉ. भारिल्ल की अनेक कृतियों का गुजराती भाषा में अनुवाद किया है। पूज्य गुरुदेवश्री द्वारा प्रचारित तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में आपका महत्वपूर्ण योगदान था। टोडरमल महाविद्यालय के छात्रों के प्रति आपका भरपूर स्नेह रहता था। आपके निधन से संस्था ने अपना एक गहरा शुभचिंतक खो दिया है।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हो - यही मंगल भावना है।

54वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर

रविवार, दिनांक 17 मई से बुधवार, 3 जून 2020 तक

कार्यक्रम स्थल :- चैतन्यधाम, अहमदाबाद-हिम्मतनगर नेशनल हाइवे-48, पोस्ट-धणप, जिला-गांधीनगर (गुज.)

आप सभी को शिविर में पधारने हेतु

हार्दिक आमंत्रण है।

संपर्क सूत्र- ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 (राज.) फोन - 0141-2705581, 2707458; **Email - ptstjaipur@yahoo.com**

आवास प्रमुख - पण्डित सचिन शास्त्री (9924281114), पण्डित मनीष शास्त्री (8087922580)

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

प्रकाशक व मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com

प्रकाशन तिथि : 28 फरवरी 2020

प्रति,